चेतन क्यों पर अपनाता है....

(आदरणीय पण्डित कैलाशचन्द जैन कृत
जैन-सिद्धान्त प्रश्नोत्तरमाला के सातवें भाग से संकलित)

चेतन क्यों पर अपनाता है, आनन्दघन तू खुद ज्ञाता है ॥टेक॥

ज्ञाता क्यों करता बनता है, खुद क्रमबद्ध सहज पलटता है।
सब अपनी धुन में धुनता है, तब कौन जगत में सुनता है ॥1॥

उठ चेत जरा क्यों सोता है, फिर देख ज्ञान क्या होता है।
क्यों पर का बोझा ढ़ोता है, क्यों जीवन अपना खोता है ॥2॥

पर का तू करता बनता है, कर तो कुछ भी नहीं सकता है।
यह विश्व नियम से चलता है, इसमें नहीं किसी का चलता है ॥3॥

जो पर का असर मानता है, वह धोखा निश्चय खाता है।
जब जबरन का विष जाता है, तब सहज समझ में आता है ॥4॥

जो द्रव्य द्वारे आता है, वह जीवन ज्योति जगाता है।
सुखधाम चिन्तामणि ज्ञाता है, आनन्द अनुभव नित पाता है ॥5॥